Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-11* *November 2025***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

योग शिक्षा को आधुनिक स्वरूप देने में स्वामी रामदेव जी की भूमिका का अध्ययन

डॉ0 कमलेश सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी (उ0प्र0)

सारांश–

योग शिक्षा भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जिसका उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्य स्थापित करना है। आधुनिक युग में योग के प्रति जन–जागरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास स्वामी रामदेव जी के प्रयासों से व्यापक स्तर पर संभव हुआ। उन्होंने योग को पारंपरिक साधना से निकालकर सामाजिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक मंच पर प्रस्तुत किया। यह शोध पत्र स्वामी रामदेव जी द्वारा योग शिक्षा को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने में किए गए योगदान, विधियों, और उनके प्रभावों का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द– योग शिक्षा, स्वामी रामदेव, पतंजलि योगपीठ, आधुनिकता, स्वदेशी, स्वास्थ्य।

प्रस्तावना–

भारत की संस्कृति में योग का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। महर्षि पंतजलि ने योग शब्द को समाधि के अर्थ में प्रयुक्त किया है। व्यास जी ने "योगः समाधिः" कहकर योग शब्द का अर्थ समाधि ही बताया है। योग का शाब्दिक अर्थ है "युज धातु" से उत्पन्न, जिसका अर्थ है जोड़ना। पाणिनी ने "योग" शब्द की व्युत्पत्ति "युजिर योगे" "युज समाधों" तथा "युज संयमने" इन तीन घातुओं से मानी हैं। प्रथम व्युत्पत्ति के अनुसार "योग" शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग किया गया है। जैसे– जोड़ना, मिलान, मेल आदि इसी आधार पर जीवात्मा और परमात्मा का मिलन योग कहलाता है इसी संयोग की अवस्था को "समाधि" की संज्ञा दी जाती है जो कि जीवात्मा और परमात्मा की समता होती है।योग केवल शारीरिक व्यायाम न होकर मानसिक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम है। प्राचीन काल में पतंजलि द्वारा सूत्रबद्ध किया गया योग दर्शन जीवन का समग्र विज्ञान माना गया है। वर्तमान भौतिक युग में जीवन की गति, तनाव, और असंतुलन के कारण योग का महत्व और बढ़ गया है। इसी संदर्भ में स्वामी रामदेव जी ने योग को नई दिशा प्रदान करते हुए इसे आम जनता के दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया। उन्होंने योग शिक्षा को आधुनिक माध्यमों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और जनसामान्य की भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे योग विश्व स्तर पर प्रतिष्ठापित एवं लोकप्रिय हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य–

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि स्वामी रामदेव जी ने योग शिक्षा को आधुनिक स्वरूप देने में किस प्रकार योगदान दिया। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. स्वामी रामदेव जी द्वारा योग के प्रचार–प्रसार की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
2. योग शिक्षा को आधुनिक तकनीक और विज्ञान की समन्वित शैक्षिक प्रणाली से जोड़ने के प्रयासों का विश्लेषण करना।
3. स्वामी रामदेव जी के कार्यों से समाज, स्वास्थ्य, और शिक्षा क्षेत्र पर पड़े प्रभावों का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान की विधि

यह शोध वर्णनात्मक और विषय–वस्तु विश्लेषण विधि पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे, संदर्भ

ग्रन्थों, शोध प्रबंधों, विभिन्न विश्वकोशों, जर्नल, पत्रिकाओं, समाचार लेखों, सरकारी रिपोर्टों, और पतंजलि योगपीठ की वेबसाईट व विभिन्न वेबसाईटों से प्राप्त आँकड़ों और विवरणों का विश्लेषण किया गया है।

स्वामी रामदेव जी का परिचय

प्रारंभिक जीवन और जन्म

स्वामी रामदेव जी का जन्म 25 दिसम्बर 1965 को हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिले के अली सैयदपुर (अब अलीपुर) गाँव में हुआ था। उनके माता–पिता का नाम रामनिवास यादव और गुलाब देवी है। बचपन में उनका नाम रामकृष्ण यादव था। वे बचपन से ही अध्यात्म, योग और वेदों के अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। उन्होंने प्रारंभिक अवस्था में ही संस्कृत, आयुर्वेद, और योग का अध्ययन किया और बाद में तपस्वी जीवन अपनाया। 1995 में दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट की स्थापना तथा 2006 में पतंजलि योगपीठ की स्थापना कर उन्होंने योग, आयुर्वेद और स्वदेशी उद्योगों को संगठित किया।

स्वामी रामदेव जी भारत के प्रसिद्ध योगगुरु, आयुर्वेदाचार्य, समाजसेवी और पतंजलि योगपीठ के संस्थापक हैं। उन्होंने योग, प्राणायाम और आयुर्वेद के माध्यम से भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में स्वास्थ्य, भारतीय संस्कृति और स्वदेशी आंदोलन की चेतना जगाई है। उनका जीवन त्याग, साधना और सेवा का प्रतीक है। वर्तमान समय में पूज्य स्वामी रामदेव जी किसी परिचय के मोहताज नहीं है। वैश्विक स्तर पर स्वामी रामदेव जी ने योग शिक्षा को एक अलग पहचान दिलाई है।

शिक्षा और आध्यात्मिक साधना

रामकृष्ण जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में प्राप्त की। बचपन से ही वे अध्यात्म विज्ञान की ओर झुकाव रखते थे और सांसारिक विषयों की अपेक्षा धार्मिक पुस्तकों, योगाभ्यास और योग साधना में रुचि रखते थे। बाद में उन्होंने गुरुकुल कालवा (हरिद्वार) में अध्ययन किया, जहाँ उन्होंने संस्कृत, वेद, व्याकरण और आयुर्वेद का गहन एवं विशेष अध्ययन किया। यहीं पर उन्होंने गुरू दीक्षा लेकर 'स्वामी रामदेव' नाम ग्रहण किया। स्वामी रामदेव जी ने योग शिक्षा के प्रति अपनी आध्यात्मिक साधना के कारण विश्व पटल पर अपने को प्रतिष्ठापित किया है। योग शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा के कारण ही आज योग शिक्षा जन–जन तक सर्वसुलभ हो पाई।
योग और समाज सेवा की शुरुआत

स्वामी रामदेव जी ने हरिद्वार को अपनी साधना का विश्वविख्यात केंद्र बनाया। उन्होंने योग और प्राणायाम को आम जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। प्रारंभ में उन्होंने गाँव–गाँव जाकर योग शिविर आयोजित किए। सन् 2000 ई0 के दशक में स्वामी रामदेव जी ने "आस्था चैनल" के माध्यम से "योग विज्ञान" कार्यक्रम शुरू किया, और लोगों को योग करने के लाभों से परिचित कराया व कुछ प्रमुख रोगों से मुक्ति पाने में योग शिक्षा की भूमिका से परिचित कराया, जिसने उन्हें घर–घर में लोकप्रिय बना दिया।

पतंजलि योगपीठ और संस्थान

स्वामी रामदेव जी ने आचार्य बालकृष्ण जी के सहयोग से "पतंजलि योगपीठ", हरिद्वार की स्थापना की। पतंजलि योगपीठ का प्रमुख उद्देश्य था–

- योग और आयुर्वेद का जन–जन तक प्रचार–प्रसार करना।
- प्राचीन भारतीय औषधियों और विभिन्न वैकल्पिक उपचार पद्धतियों को पुर्नजीवित करना।
- स्वदेशी उत्पादों का निर्माण और उपयोग को बढ़ावा देना।

वर्तमान में पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार भारत का सबसे बड़ा योग एवं आयुर्वेद केंद्र है और इसके उत्पाद सम्पूर्ण विश्व में निर्यात किए जाते हैं।

स्वदेशी आंदोलन और राष्ट्र निर्माण में योगदान

स्वामी रामदेव जी ने "स्वदेशी अपनाओ, देश बचाओ" का नारा देकर भारतीय जनता में स्वदेशी के प्रति विशेष चेतना जगाई। उन्होंने विदेशी उत्पादों के बहिष्कार और भारतीय उत्पादों के उपयोग की आम भारतीय को प्रेरणा दी, साथ ही साथ उन्होंने भ्रष्टाचार और काला धन के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा भारत को "योगमय और रोगमुक्त" बनाने का संकल्प लिया। राष्ट्र निर्माण में स्वामी रामदेव जी की अतुलनीय भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है।

योग के वैश्विक प्रचार में भूमिका

स्वामी रामदेव जी ने योग को आधुनिक वैज्ञानिक रूप दिया और विश्वभर में लाखों लोगों को योग सिखाया।

इसी क्रम में सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ अपने प्रस्ताव द्वारा 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" के रूप में घोषित किया जाना अपने आप में एक ऐतिहासिक निर्णय था। इस कारण भारत की प्राचीन योग शिक्षा की विधा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। योग शिक्षा की इस अंतर्राष्ट्रीय पहचान में स्वामी रामदेव जी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

योग शिक्षा को आधुनिक स्वरूप देने में स्वामी रामदेव जी की भूमिका

(क) योग शिक्षा का जन–जन तक प्रचार–प्रसार

स्वामी रामदेव जी ने योग को साधु–सन्यासियों के आश्रमों एवं मठों से बाहर निकालकर आम जनमानस तक पहुँचाया। सन् 2000 ई0 के दशक में आस्था चैनल एवं तकनीकी साधनों पर उनके दैनिक योग सत्रों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया। सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन, और ऑनलाइन शिविरों के माध्यम से उन्होंने योग को परंपरागत पद्धति से निकालते हुये डिजिटल साधनों से जोड़ा। जिससे योग शिक्षा "योग से योगा" तक के सफर को तय करते हुये आम–जनमानस में अपने नये कलेवर में प्रस्तुत हुई।

(ख) संस्थागत विकास और शिक्षा में योग का समावेश

पतंजलि विश्वविद्यालय और पतंजलि आयुर्वेद कॉलेज की स्थापना द्वारा योग को औपचारिक शिक्षा का हिस्सा बनाया। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में योग विषय को शामिल करने के लिए उन्होंने प्रेरणा दी। योग प्रशिक्षकों और शोधार्थियों के लिए आधुनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। स्वामी रामदेव जी के प्रयासों एवं प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप भारत सरकार द्वारा बनाई जा रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत स्कूलों में योग शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। यह बात प्रथम योग ओलिंपियाड, नई दिल्ली का उद्घाटन करने वाले मानव संसाधन विकास मंत्रालय में स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता सचिव सुभाष चंद्र खुटियां ने कहीं। इस ओलिंपियाड में 22 राज्यों के 350 छात्रों ने भाग लिया। एन०सी०आर०टी० परिसर में आयोजित तीन दिवसीय समारोह का उद्देश्य देशभर के स्कूलों के छात्रों में इस प्राचीन विधा का प्रचार प्रसार करना है। खुंटिया ने कहा कि सरकार द्वारा बनाई जा रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में योग का एक महत्वपूर्ण स्थान होगा। योग को संतुलन बनाए रखने और शरीर एवम् मस्तिष्क का स्वास्थ्य सुनिश्चित करने वाली कला बताते हुए उन्होंने कहा कि ओलिंपियाड हर साल कराया जाएगा। ताकि स्कूल जाने वाले हर बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उसके द्वारा योग सीखना सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने कहा, योग ओलिंपियाड सभी राज्यों की भागीदारी संभव बनाने के लिए हर साल आयोजित किया जाएगा। इसका उद्देश्य स्कूल के बच्चों को योग सिखाना होगा। एन०सी०ई०आर०टी० ने उच्चतम, प्राथमिक एवं माध्यमिक छात्रों के लिए योग पर किताबें प्रकाशित की हैं। यह छठी से दसवीं कक्षा तक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रुपरेखा का हिस्सा है। योग शिक्षा के प्रति स्वामी रामदेव जी के अतुलनीय प्रयासों के फलस्वरूप ही भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रमुख स्थान दिया गया है।

(ग) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश

योग को वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध करने के लिए विभिन्न रोगों (मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप आदि) पर शोध करवाए। आधुनिक चिकित्सा के साथ समन्वय स्थापित कर योग को चिकित्सा–परक पद्धति के रूप में नये कलेवर में प्रस्तुत किया गया। स्वामी रामदेव जी के प्रयासों के फलस्वरूप ही आयुष मंत्रालय ने योग चिकित्सा को भी वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में मान्यता दी।

(घ) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग का प्रसार

स्वामी रामदेव जी ने भारत के साथ–साथ विदेशों में भी हजारों योग शिविरों का आयोजन किया। 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" घोषित करवाने में उनकी प्रेरक भूमिका रही। योग को भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान के रूप में स्थापित किया।

(ङ) स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का संदेश

पतंजलि उद्योगों के माध्यम से उन्होंने योग, आयुर्वेद, और स्वदेशी उत्पादों को आत्मनिर्भर भारत अभियान से जोड़ा। योग के साथ आर्थिक स्वतंत्रता और स्वास्थ्य के संतुलन का नया मॉडल प्रस्तुत किया।

स्वामी रामदेव जी के योगदान के प्रभाव

1. **सामाजिक प्रभाव**– योग अब सभी वर्गों में लोकप्रिय हुआ हैय समाज में स्वास्थ्य चेतना बढ़ी है।
2. **शैक्षणिक प्रभाव**– योग को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विषय के रूप में अपनाया गया है।
3. **आर्थिक प्रभाव**– योग शिक्षा और प्रशिक्षण से हजारों लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ।

4. **वैश्विक प्रभाव**– योग के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर नई प्रतिष्ठा मिली।
5. **मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभाव**– योग के अभ्यास से जीवनशैली जनित रोगों में कमी आई है।

निष्कर्ष

स्वामी रामदेव जी का जीवन एक प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने योग को केवल साधना न मानकर, उसे जीवन जीने की कला बताया। उनका उद्देश्य है– "स्वस्थ भारत, सशक्त भारत"। स्वामी रामदेव जी ने अपने जीवन को योग एवं आयुर्वेद के लिए पूर्णतः समर्पित कर दिया। आज स्वामी रामदेव जी के प्रचार–प्रसार के कारण ही योग शिक्षा पूरे विश्व पटल पर नये सिरे से प्रतिस्ष्ठापित हुई है। स्वामी रामदेव जी ने योग शिक्षा को अपने प्रयासों से जन–जन तक पहुँचाने में अद्वितीय भूमिका का निर्वहन किया हैं। उनकी यह शिक्षा सिखाती है कि योग और आयुर्वेद के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन बनाकर मानवता की सेवा अत्यंत ही कुशलतापूर्वक की जा सकती है और सम्पूर्ण मानवता को विभिन्न असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाया जा सकता है।

स्वामी रामदेव जी ने योग शिक्षा को केवल आध्यात्मिक साधना न मानकर एक सामाजिक और वैज्ञानिक आंदोलन के रूप में वैश्विक प्रस्तुत किया। उन्होंने योग शिक्षा को आधुनिक विज्ञान, तकनीक, और शिक्षा प्रणाली से जोड़कर इसका नवोन्मेषी स्वरूप प्रस्तुत किया। आज योग शिक्षा सम्पूर्ण विश्व में भारत की सांस्कृतिक पहचान, स्वास्थ्य और संतुलन का प्रतीक बन चुकी है। स्वामी रामदेव जी के प्रचार–प्रसार के कारण ही योग शिक्षा वैश्विक स्तर पर जन–जन तक पहुँची और उनके प्रयासों का ही प्रतिफल है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेकर एक प्रस्ताव के द्वारा सितम्बर 2014 में 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" के रूप में मनाने की घोषणा की। इस कारण योग शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली जो कि भारतीय संस्कृति को अपने आप में गौरवान्वित होने का क्षण प्रदान करती है। इस ऐतिहासिक परिवर्तन में स्वामी रामदेव जी का योगदान न केवल अनुकरणीय है, बल्कि भारतीय संस्कृति के पुर्नजागरण का प्रमाण भी है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को वैश्विक पटल पर प्रचारित प्रसारित करने में स्वामी रामदेव जी की अग्रणी भूमिका है। स्वामी रामदेव जी की इस भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों ने उन्हें अपने संस्थान की मानद उपाधियों से विभूषित किया है व विभिन्न प्रकार की संस्थाओं ने उनके योगदान को नमन करते हुए विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से पुरस्कृत करने का कार्य भी किया है। स्वामी रामदेव जी के योगदान को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि वह भारतीय तारामण्डल के वह दैदीप्यमान सितारे है जो युगों–युगों तक चमकते रहेगें।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. स्वामी रामदेव, योग साधना एवं योग विज्ञान, पतंजलि प्रकाशन, हरिद्वार।
2. पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार– आधिकारिक वेबसाइट एवं प्रकाशन।
3. भारत सरकार, आयुष मंत्रालय, "राष्ट्रीय योग नीति रिपोर्ट", 2020।
4. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), Yoga and Health Benefits Report, 2021A.
5. दैनिक भास्कर, द हिंदू, टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित साक्षात्कार और लेख।
6. भारत सरकार, आयुष मंत्रालय योग नीति दस्तावेज।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

8. संयुक्त राष्ट्र महासभा (United Nations General Assembly). Resolution A/RES/69/131: International Day of Yoga, (2014).
9. संयुक्त राष्ट्र (United Nations). The Sustainable Development Goals, (2015), https://sdgs-un-org/
10. विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization), WHO guidelines on physical activity and sedentary behaviour- (2020).
11. Ministry of AYUSH, Government of India, Common Yoga Protocol, (Various Editions).
12. Patanjali Yoga Sutras of Patanjali, (Various Commentaries).
13. Bhagavad Gita, (Various Translations and Commentaries).
14. International Yoga Day Official Websites (UN and Government of India), (Archived Content from 2015-2024).
15. Relevant Academic Journals and Publications on Yoga and its Benefits.

Cite this Article

'डॉ0 कमलेश सिंह' "योग शिक्षा को आधुनिक स्वरूप देने में स्वामी रामदेव जी की भूमिका का अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:11, November 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i11001

Published Date- 02 November 2025